ग्रन्थमाला ‘आदर्श शिष्य’ : खण्ड १

आदर्श शिष्य कैसे बनें ?

शिष्य वह है, जो गुरुको अपेक्षित साधना करे !

हिन्दी (Hindi)

संकलनकर्ता

हिन्दू राष्ट्र-स्थापनाके उद्घोषक

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवले

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातन संस्था

卐 सनातनके ग्रन्थोंकी भारतकी भाषाओंके अनुसार संख्या 卐

मराठी ३४४, अंग्रेजी २०१, कन्नड १९८, हिन्दी १९५, गुजराती ६८, तेलुगु ४५, तमिल ४३, बांग्ला ३०, मलयालम २४, ओडिया २२, पंजाबी १३, नेपाली ३ एवं असमिया २

अप्रैल २०२४ तक ३६५ ग्रन्थोंकी १३ भाषाओंमें ९६ लाख ५४ सहस्र प्रतियां !

ग्रन्थके संकलनकर्ताओंका परिचय

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. जयंत बाळाजी आठवलेजीके आध्यात्मिक शोधकार्यका संक्षिप्त परिचय

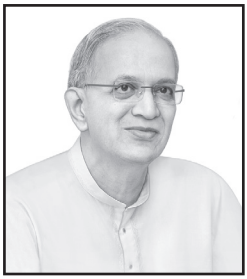

१. अध्यात्मप्रसारार्थ 'सनातन संस्था'की स्थापना

२. शीघ्र ईश्वरप्राप्तिके लिए 'गुरुकृपायोग' साधनामार्गकी निर्मिति : गुरुकृपायोगानुसार साधनासे १५.५.२०२४ तक १२७ साधकोंको सन्तत्व प्राप्त तथा १,०५८ साधक सन्तत्वकी दिशामें अग्रसर हैं ।

३. आचारधर्मपालन, देवता, साधना, आदर्श राष्ट्ररचना, धर्मरक्षा आदि विविध विषयोंपर विपुल ग्रन्थ-निर्मिति

४. हिन्दुत्वनिष्ठ नियतकालिक 'सनातन प्रभात'के संस्थापक-सम्पादक

५. धर्माधिष्ठित हिन्दू राष्ट्र (ईश्वरीय राज्य)की स्थापनाकी उद्घोषणा (वर्ष १९९८)

६. 'हिन्दू राष्ट्र'की स्थापना हेतु सन्त, सम्प्रदाय, हिन्दुत्वनिष्ठ आदि का संगठन तथा उनका दिशादर्शन !

(सम्पूर्ण परिचय हेतु पढें – www.Sanatan.org)

सच्चिदानंद परब्रह्म डॉ. आठवलेजीका साधकोंको आश्वासन !

स्थूल देहको है स्थल कालकी मर्यादा ।
कैसे रहूं सदा सभीके साथ ॥
सनातन धर्म मेरा नित्य रूप ।
इस रूपमें सर्वत्र मैं हूं सदा ॥ - जयंत बाळाजी आठवले
१८.५.१९९६

पू. संदीप गजानन आळशी

सनातनकी ग्रन्थ-रचना की सेवा करनेके साथ ही राष्ट्रजागृति एवं धर्मप्रसार करनेवाली प्रसारसामग्रीके (सनातन पंचांग, धर्मशिक्षा फलक इत्यादि के) लिए लेखन करते हैं । साधना, राष्ट्र एवं धर्म सम्बन्धी नियतकालिक 'सनातन प्रभात'में प्रबोधनपरक लेखन भी करते हैं ।

अनुक्रमणिका

१.	व्याख्या एवं अर्थ	८
२.	शिष्यत्वका महत्त्व	८
३.	विद्यार्थी एवं शिष्य	९
४.	माध्यम एवं शिष्य	९
५.	साधक एवं शिष्य	१०
६.	गुरु-शिष्य सम्बन्ध	११
७.	गुरुप्राप्ति	१२
८.	गुरुकृपा	१४
९.	कर्तव्य एवं गुरुऋण	२०
१०.	गुण (मुमुक्षुत्व, आज्ञाकारिता, नम्रता इत्यादि)	२१
११.	प्रकार	५८
१२.	गुरुके रूप एवं पूजन	६०
१३.	गुरुके प्रति व्यवहार कैसा हो ?	६४

१४. शिष्यका जीवन ८०

१५. शिष्य एवं गुरुबन्धु ८५

१६. पति-पत्नीके एक ही गुरु होना ८७

१७. शिष्यकी परीक्षा ८७

१८. कुण्डलीके ग्रह, वार एवं गुरु ८८

१९. गुरुसे क्या मांगें ? ८८

२०. उन्नति किसपर निर्भर है ? ८९

२१. ईश्वरप्राप्तितक शिष्यका मार्गक्रमण ९१

२२. नए गुरु करना (गुरु बदलना) ९१

२३. अधोगतिके कारण ९८

२४. अनुभूति एवं उन्नतिके लक्षण - आध्यात्मिक उन्नतिके लक्षण ९९

卐 **'आदर्श शिष्य कैसे बनें ?' सम्बन्धी गहन ज्ञान** १०६

ग्रन्थकी विशेषता दर्शानेवाला सूक्ष्म स्तरीय प्रयोग !

प्रस्तुत ग्रन्थ पटलपर (टेबलपर) रखकर हथेली ग्रन्थके मुखपृष्ठसे २ - ३ सें.मी. दूर रखें । 'क्या हथेलीपर स्पन्दन (सूक्ष्म संवेदनाएं) अनुभव होते हैं ? 'मनको क्या अनुभव होता है, अच्छा अथवा कष्टदायक ?', इस ओर ध्यान दें । तदुपरान्त हथेली ग्रन्थके ऊपरसे सीधी रेखामें उठाते जाएं । ऐसा करते समय 'ग्रन्थसे कितने ऊपर तक हथेलीमें संवेदना होती है ?', यह भी अनुभव करें । कुछ लोग पहले प्रयासमें संवेदना नहीं अनुभव कर पाएंगे । तब यह प्रयोग पुनः करें । हथेलीमें संवेदना होना बंद हो जाए, तब यह प्रयोग रोक दें । इस प्रयोगका उत्तर पृष्ठ '१०५' पर दिया है ।

भूमिका

प्राथमिक अवस्थाके प्रत्येक साधकको यह ज्ञात रहता है कि 'गुरुके अतिरिक्त कोई तारनहार नहीं' तथा अगले चरणके साधकको इस बात का अनुभव रहता है । गुरुप्राप्तिके लिए निश्चितरूपसे क्या करना है, यह ज्ञात न होनेसे अनेक साधकोंका मात्र वर्तमान जन्म नहीं, अपितु आगे के अनेक जन्म व्यर्थ जाते हैं । ऐसे साधकोंको कुछ मार्गदर्शन मिले, इस दृष्टिसे यह ग्रन्थ लिखा है । गुरुप्राप्ति हेतु किसी आध्यात्मिक दृष्टिसे उन्नत व्यक्तिको प्रसन्न करना आवश्यक है, जबकि अखण्ड गुरुकृपा हेतु निरन्तर गुरुको प्रसन्न करना आवश्यक है । इसका सुगम मार्ग है उनकी अपेक्षाके अनुरूप प्रयास करते रहना । उनकी एक ही अपेक्षा होती है - साधना । साधनाके आगेके चरणमें तन, मन, धन एवं प्राण भी श्री गुरु के चरणोंमें समर्पित करना आवश्यक है । यह चरण-प्रति-चरण करनेकी दृष्टिसे शिष्यमें कौनसे गुण आवश्यक हैं, गुरुके प्रति भाव कैसा होना चाहिए, गुरुबन्धुओंके साथ आचरण कैसा होना चाहिए, शिष्यकी जीवन -पद्धति कैसी होनी चाहिए इत्यादि का विस्तृत व्यावहारिक विवरण इस ग्रन्थमें प्रस्तुत है । गुरुकृपाका अर्थ क्या है तथा वह कैसे कार्य करती है, इसका भी विवरण प्रस्तुत ग्रन्थमें दिया है ।

श्री गुरुचरणोंमें प्रार्थना है कि प्रस्तुत ग्रन्थके मार्गदर्शनसे जिज्ञासुओं की साधकतक, साधकोंकी शिष्यतक तथा शिष्योंकी गुरुपदतक प्रगति हो ! - **संकलनकर्ता**

शीघ्र ईश्वरप्राप्ति हेतु सरल मार्ग दिखानेवाला सनातनका ग्रन्थ !

अध्यात्मका प्रस्तावनात्मक विवेचन

आनन्दी रहने व ईश्वरप्राप्ति करने हेतु पूजा-अर्चना, व्रत आदि पर्याप्त नहीं होते, उनसे आगे बढकर 'साधना' करनी पडती है । कुलदेवताका नामजप करना, सत्संगमें जाना, सत्सेवा करना, षड्रिपु एवं अहं-निर्मूलन हेतु प्रयत्न करना आदि साधनासम्बन्धी दिशादर्शन इस ग्रन्थमें उपलब्ध है !